संवाद

पत्रकारिता, जनसंचार एवं नवमीडिया स्कूल, केन्द्रीय विश्वविद्यालय हिमाचल प्रदेश, धर्मशाला

नवम्बर-दिसम्बर 2016

चेतना से संवेदना तक

आधुनिक युग में भी जिन्दा पुराना लोकतन्त्र

हिमाचल प्रदेश के जिले कुल्लू के मलाना गांव की लोकतंत्रीय व्यवस्था अत्यंत प्राचीन है| 500 परिवारों का गांव मलाना 1200 फुट की ऊंचाई पर वसा हुआ है| इस गांव की खासियत यह है कि यहाँ अभी भी पुराना प्रजातंत्रिक ढांचा है| यहाँ भारतीय कानून नही चलता| यहाँ की अपनी एक संसद है जो सारे पैसले करती है| लोकसभा व राज्यसभा की भांति ज्येष्टांग (अपर हाउस) और क्निष्टांग (लोअर हाउस) है| प्रत्येक तीन वर्ष के पश्चात इनके चुनाव होते है |धार्मिक मान्यता के अनुसार ये चुनाव जमदग्नि के ऋषि आदेशानुसार कराए जाते है| मलाना गॉव में किसी भी महत्बपूर्ण मसले पर चर्चा के लिए परिषद की बैठक बुलाई जाती है| ये बैठक गॉव के बीचो-बीच बने पथरों के चबूतरों पर होती है| मलाना भारत का एकलोता गॉव है जहाँ सम्राट अकबर की पूजा की जाती है| जानकारों के अनुसार भी मलाना विश्व का लोकतान्त्रिक प्रणाली से चलने वाला सबसे पुराना गॉव है| यहाँpहुँचने के लिए दो रस्ते है | एक रास्ता कुल्लू से मनाली की ओर 20 किलोमीटर की दूरी पर स्थित नगर गांव से होकर जाता है | परन्तु यह मार्ग आम लोगो के लिए आसान नही है, क्यूंकि यह काफी कठिन पैदल मार्ग है | इस पैदल यात्रा में दो दिन का समय भी लग सकता है | दूसरा रास्ता भुंतर से मणिकर्ण घाटी के जरी नामक स्थान से हो कर जाता है | मलाना गॉव के बारे में कई तरह किवंदतियां प्रचलित है| इन किवन्द्तियों की सत्यता के बारे में विश्वास के साथ कुछ भी कहना कठिन है लेकिन मलाना में संसदीय लोकतंत्रीय व्यवस्था सदियों से चल रही है| यह व्यवस्था देश के गुलाम होने से पहले की बताई जाती है | बहुत से इतिहासकार मलाना वासियों को यूनानियों का वंशज मानते है | मलाना को हिमालय का एथैंस भी कहते है| मलाना वासी जमदग्नि ऋषि को अपना ग्राम देवता मानते है| पुजारी को छोड़ कर किसी भी व्यक्ति को मन्दिर के अंदर प्रवेश करने की अनुमति नहीं है| मलाना गॉव में संस्कृति का प्रदर्शन मुख्यत: दो बार होता है| एक तब जब फरवरी माह में फागली का त्यौहार मनाया जाता है और दूसरा 15 अगस्त को जब हमारा देश भारत आजाद हुआ था| 15 अगस्त एक ऐसा दिन है जिस दिन मलाना के देवता के दर्शन होते है| इस दिन मलाना में मेला लगता है जिसमें मलाना की संस्कृति की झलक देखने को मिलती है| मलाना वासियों का रहन सहन बहुत साधारण हैं | यहाँ के घर अधिकतर हिमाचली कठकुनी शैली में निर्मित किये जाते हैं | यहाँ के घर देवदार की लकड़ी व पत्रों से बनाये जाते हैं | पत्थरों की चिनाई के लिए मिटटी का प्रयोग किया जाता हैं | हल ही ग्रामीण लोगो का मुख्य कार्य पशुपालन, खेती और जड़ी बूटीयों का संग्रह करना होता था | वर्तमान में यहाँ एक स्कूल खोला गया व एक आयुर्वेदिक लघु चिकित्साल्य भी खोला गया | लोगो के रहन सहन में परिवर्तन आया है जिस करण अब गांव में बहुमजिला आधुनिक भवनों का निर्माण किया जा रहा है | परन्तु प्रकृति के प्रति इनके नियम अभी भी पेहले के समान कठोर है | गांव वासियों के लिए पेड़ में किल गाड़ना और पेड़ो/जंगल में आग लगाना निषेध है|

कुसुम शर्मा

मन्दिरों का शहर हमीरपुर

हमीरपुर भारत के हिमाचल का एक शहर है |हिमाचल की निचली पहाडियों पर स्थित हमीरपुर जिला समुद्रतल से 400 से 1100 मीटर की ऊंचाई पर स्थित है |देवदार के पेड़ों से गिरा यह शहर हिमाचल के अन्य शहरों से कम ठंडा है | काँगड़ा जिले से अलग होने के बाद 1972 में हमीरपुर अस्तित्व में आया था | यहाँ के कुछ ऐतिहासिक और धार्मिक स्थल इस जिले की प्रसिद्धी का कारण है | हमीरपुर के स्थित है | हमीरपुर से सुजानपुर टिहरा 22किलोमीटर की दूरी पर स्थित है |सुजानपुर में एक बहुत बड़ा मैदानहै जिसमें चार दिन तक होली पर्व आयोजित किया जाता है इस पर्व का लोग चारों दिन पूरा -पूरा आनदं उठाते हैं यहाँ एक सैनिक स्कूल भी है धार्मिक केन्द्र के रूप में यह स्थान खासा लोकप्रिय है यहाँ गोरी-शंकर और मुरली मनोहर के मंदिर बने हुए हैं | आवागमन वायु मार्ग काँगड़ा जिले का गगल एँअरपोर्ट

देवसिद्ध मंदिर ,सुजानपुर टिहरा और नादौन खास लोकप्रिय हैं| शिमला - धर्मशाला रोड़ पर स्थित हमीरपुर टाउन यहाँ का जिला मुख्यालय है | हमीरपुर में बहुत बड़ा देवसिद्ध मंदिर बाबा बालकनाथ का है | इस मंदिर में लोग ज्यादातर रविबार को आते हैं| नवरात्रों के अबसर पर इस मंदिर में बड़ी संख्या में लोग पहुँचते हैं | इस मंदिर में लोगों के ठरहने का भी उचित प्रबन्ध है यह मंदिर बिलासपुर की सीमा पर यहाँ का निकटतम एअरपोर्ट है | रेलमार्ग हमीरपुर का निकटतम रेलवे स्टेशन ऊना है |हमीरपुर के लिए यहाँ से नियमित बसे चलती रहती है | सड़क मार्ग द्वारा हिमाचल का लगभग पूरा क्षेत्र सड़क मार्ग हमीरपुर से जुड़ा है| हिमाचल प्रदेश के लगभग सभी शहरों और पड़ोसी शहरो से यहाँ के लिए बस सेवाएँ उपलब्ध हैं |

अनु शर्मा

मंहगाई से लड़ती जिंदगी

भूख से बेहाल व्यक्ति को चाँद भी रोटी का टुकड़ा नजर आता है | घर पर बीवी चार बच्चे और बूढी माँ | आमदनी अठन्नी खर्चा रुपया, मजदूरी करके श्याम बाबु को मात्र 100रु मिलते थे | माँ की गठिया की बीमारी तो बीवी को तो जैसे अस्पताल से प्यार ही हो गया था | 100रु तो ऐसे ही चले जाते | साहूकार से 50रु कर्ज लेना पड़ता था | कर्जदार हर दिन आकर उधार वापिस मांगते , श्याम बाबु को धमकिया मिलती | गालियाँ सुनना तो जैसे अब आदत ही बन गयी थी | घर पर 60 साल पुरानी खपरेल का मकान , बारिश में पानी बाहर की जगह अंदर को आता था | जवान लड़की शादी लायक पर शादी के लिए पैसे नहीं , साहूकार हर दिन आकर बईज्ती करता | उसकी पत्नी और बच्चों को बुरा -भला कहता था |

अगले दिन दिवाली की तेयारिया हो रही थी चारो ओर चहल - पहल थी | आज श्याम अभी तक सो रहा था संतोषी ने सोचा की जाकर उठा दू त्योहार का दिन है इतनी देर तक सोना अच्छी बात नही | संतोषी श्याम को जगाने चल पड़ती है अरे! सुनते हो उठों , उठो इतनी देर तक कोन सोता है भला बाहर देखो जरा कितना सुन्दर नजारा है आज पर संतोषी को क्या पता था की श्याम बाबु अब कभी नही उठेंगे | उन्होंने कर्जमुक्त होने के लिए अपनी जीवन लीला समाप्त कर ली | इस महंगाई ने उनकी जान ले ली , महंगाई ने एक माँ का बेटा , एक पत्नी का पति और बच्चों से उनके पिता को छीन लिया| लेकिन सोचने वाली बात ये है की क्या इस महंगाई से बचने का यही एक उपाय था | श्याम बाबु खुद तो कर्जमुक्त हो गये पर अपने बीवी और बच्चों को परेशानी मे छोड़ गए |

सुमन शर्मा

छठ-आस्था और विश्वास का पर्व

सजी सड़कें और चमकते हुए घाटों का मनमोहक दृश्य मन को आनन्दित कर देता है। न धर्म की बंदिशे, न जाति की लड़ाई। सिर्फ इंसान नज़र आते हैं। ये नज़ारा होता है छठ का। बिहार और उत्तर प्रदेश के पूर्वांचल इलाके में ये त्यौहार मनाया जाता है। हिन्दू धर्म का ये त्यौहार धीरे-धीरे धर्म और राज्य की दीवारें तोड़ता जा रहा है। दूसरे धर्म के लोग तथा अन्य राज्य के लोग भी उसी आस्था से इस पर्व को मनाने लगे हैं, जिस आस्था से बिहार और पूर्वी उत्तर प्रदेश के लोग मनाते हैं। छठ में सूर्य आराधना की जाती है। ऐसी मान्यता है की सूर्य देव छठ माँ के भाई हैं। चार दिन के इस त्यौहार में बच्चों की सलामती के लिए पूजा की जाती है। पहले दिन कद्दू भात(चावल) होता है। दूसरे दिन खरना होता है,जिसमे खीर बनाई जाती है। तीसरे दिन से 36 घंटे का निर्जला व्रत आरम्भ होता है, इस दिन डूबते सूर्य को अर्घ दिया जाता है। चौथे व अंतिम दिन उगते सूर्य को जल चढ़ा कर व्रत का समापन किया जाता है। त्यौहार किसी भी संस्कृति की पहचान होते हैं। छठ बिहार और भारतीय संस्कृति का एक अहम् हिस्सा बन चूका है। विदेश से लोग इस पर्व को और करीब से जानने के लिए बिहार आते हैं। प्रकृति की आराधना और उसमे लोगों की आस्था का ये त्यौहार है। लोगों का मानना है कि एक बार जो इस पर्व का हिस्सा बन जाता है वह हमेशा इस पर्व से जुड़ा रहना चाहता है। अमीर हो या गरीब छठ में सबके घर चहल पहल का नज़ारा देखने को मिलता है।ऐसा लगता है की पूरा समाज एक है, कहीं कोई भेदभाव नज़र नहीं है।सब एक दूसरे की मदद कर रहे होते हैं। इस आधुनिक युग में घाट पर सामाजिकता का ये दृश्य लोगों के लिए इंसानियत का एक अच्छा उदाहरण पेश करता है।लोग इसे त्यौहार नहीं बल्कि ज़िंदगी का हिस्सा मानते है। ये सिर्फ पर्व नहीं लोगों को जोड़ने वाला सूत्र है।

राजा बाबू

आज भी जिन्दा है रक्तबीज

18 करडू देवताओं की पवित्र देवभूमि कुल्लू में अनेक धार्मिक व पवित्र तीर्थ स्थान है|यह धार्मिक व ऐतिहासिक रूप से अपना विशेष महत्व रखते हैं| इनमें कुल्लू से 70 किलोमीटर दूर सैंज की पहाड़ी के अंतिम छोर पर स्थित रक्तिसर सरोवर है जो अपने प्राचीन इतिहास को आज भी संजोये हुए है|

धार्मिक मान्यताओ के अनुसार पूर्व में इस स्थान का नाम रति था लेकिन बाद में यह रक्तिसर के नाम से जाना जाने लगा| किवदंती के अनुसार इस स्थान पर महाकाली के हाथो रक्तबीज नामक राक्षस का वध किया गया था|रक्तबीज को ब्रह्मा से वरदान प्राप्त था कि उसके वध करने पर उसके शरीर से जितनी खून की बूंदे धरती पर गिरेंगी उतने ही रक्तबीज यानि राक्षस पैदा होंगे|अपनी शक्ति पर घमंड करते हुए रक्तबीज ने पाप के रास्ते पर चलना आरम्भ किया| इससे देवी देवता काफी दुखी हो गये|रक्तबीज के आतंक से छुटकारा पाने के लिए देवताओं ने अपनी सभी शक्तियाँ माँ काली को देकर रक्तबीज का अंत करने की योजना बनाई| माँ काली ने अपने दिव्य अस्त्रों द्वारा रक्तबीज का पीछा करके रक्ति नामक स्थान पर भयंकर युद्ध किया| माँ काली ने अपनी खड्ग से रक्तबीज का वध करके खून को धरती पर गिरने नहीं दिया और सारा खून पी डाला| काल का चक्र यूँ ही चलता गया और कुछ समय के बाद इस स्थान पर स्थित सरोवर का पानी खून की तरह लाल हो गया जिस कारण उस स्थान को रक्तिसर के नाम से जाना जाने लगा| धार्मिक स्थल रक्तिसर के भीतर आज भी छोटे-छोटे जलाशय बने हुए है| सैंज घाटी से 10 किलोमीटर आगे न्यूली से होते हुए कुल्लू ज़िला की अंतिम सीमा पर व पार्वती नदी के उद्गम स्थान पर स्थित ग्लेशियरों से घिरा खूबसूरत स्थल रक्तिसर है जहाँ पहुँचने के लिए करीब 3 दिन का समय लगता है|बंजार व सैंज घाटी के अलावा ज़िला के दूरदराज क्षेत्रों के लोग भी यहाँ तीर्थ स्नान के लिए पहुँचते है|वहीं कुल्लू घाटी 18 करडू देवी देवताओं का आना जाना लगा रहता है |

रक्तिसर के मध्य में एक स्थान ऐसा भी है जहाँ पुरातन घटना का साक्षात् प्रमाण देखने को मिलता है| वहां की कुछ भूमि अब भी लाल रंग की है वहीं निचली सतह से निकलने वाला पानी भी खून की तरह लाल दिखाई देता है| माना जाता है कि इस सरोवर के नीचे रक्तबीज का शव दफ़नाया गया है जिसके कारण यहाँ से लाल रंग का पानी निकलता है| यहाँ यात्रिओं का आना जाना लगा रहता है ये स्थान बहुत ही पवित्र माना जाता है|

पूजा ठाकुर

एक सफर हकीकत का

छोटी-छोटी हरकते,छोटी-छोटी बातें हमारी विचारधारा और हमारी मानसिकता बताती हैं। एक बस यात्रा भी काफी होती है समाज को जानने के लिए।समाज हर व्यक्ति से बनता है,अगर समाज में एक व्यक्ति भी ख़राब हुआ तो स्वच्छ समाज की कल्पना धुंधली हो जाती है। गरीबों के लिए लड़ने वाले, गरीबी ख़त्म करने की बात करने वाले, क्या हकीकत में ऐसे हैं? बस में चर्चा रही थी की गरीबी देश के लिए अभिशाप है। गरीबों की ज़िन्दगी बड़ी दयनीय है। आखिर वह भी इंसान है! सरकार को कुछ करना चाहिए उनके लिए। मुझे भी लग रहा था कि देश चाहता है गरीबी ख़त्म हो। संसद से भी बड़ी बहस हो रही थी और यहाँ मत भी एक ही तरफ था सारा। लग रहा था, कि आज 'गरीबी ख़त्म करो` बिल पास हो ही जाएगा। परंतु जैसा लोग दिखाते है खुद को क्या वाकई ऐसे ही होते हैं वह! पर यहाँ तो सब गरीबों के लिए लड़ने वाले लग रहे थे। अचानक बस रुकी, कंडक्टर गाली देते हुए दरवाजा खोलता है। एक आदमी,एक औरत और उनके साथ दो बच्चे बस में चढ़ते हैं। फटे पुराने कपड़े पहन रखे थे चारों ने। आदमी के हाथ में कपड़े की एक गन्दी सी गठरी थी। कंडक्टर उन्हीं चारों को गाली दे रहा था। ये एक गरीब परिवार था, जिसके पास शायद टिकट के भी पुरे पैसे नहीं थे।चारों बैठने के लिए सीट ढूंढने लगे,परंतु कोई यात्री उन्हें अपने पास बैठाने को तैयार नहीं हुआ। अंत में उन्हें पीछे जाकर बस की फर्श पर बैठना पड़ा। 'गरीबी ख़त्म करो` चर्चा समाप्त हो चुकी थी। अचानक ही बस से गरीबों के सारे सुभचिन्तक गायब हो गए थे। लगने लगा की थोड़ी देर पहले जो लोग गरीबी से नफरत करते थे, हकीकत में वो गरीबों से नफरत करते थे। उनकी नफरत उस गंदगी से थी जो उनके कपड़ो पर लगी थी। एक बस यात्रा सब बता रही थी कि कैसा व्यवहार करते हैं ये तथाकथित सभ्य लोग गरीबों के साथ। भारतीय बुद्धिजीवी समाज सिर्फ बहस तक गरीबी से नफरत करता है,हक़ीक़त में ये लोग नफरत गरीब से करते हैं।

काश.....

काश तू मैना और मैं तोता होता
उड़ जाते कहीं दूर जहां कोई ना होता
बस होता एक पीपल का पेड
रह लेते हम इसी की छांव में
तेरे सवि कोई मज़हब ना होता
काश तू मैना और मैं तोता होता

डाल में एक घोंसला होता
और उस घर में हम चैन से सोते
पत्तो के झुरमुट का दरीचा होता
मन्द हवा से हमारा राब्ता होता
काश तू मैना और मैं तोता होता

ना कोई सरहद होती ना कोई क़ानून
खुले आसमान में हम स्वच्छंद उड़ते दूर-दूर
झर झर बहते झरने में हम रोज नहाते
तू तू मैं मैं का झगड़ा ना होता
काश तू मैना और मैं तोता होता

सुनील कुमार मिश्रा

जल विवाद एक समस्या

'जल ही जीवन है' की उक्ति जल की जीवन प्रदान करने की अमृतमयी शक्ति के फलस्वरूप अस्तित्व में आई है | जल पृथ्वी पर बसने बाले पेड़ -पौधों , पशु -पक्षियों और मनुष्यों को जीवन प्रदान करने वाला ईश्वरीय वरदान है | वैज्ञानिकों के अनुसार पृथ्वी पर जीवन की उत्पति और उसका विकास यहाँ पर मौजूद जल सम्पदा के कारण ही सम्भव हुआ है |

महात्मा गांधी ने कहा था कि प्रकृति में लाखों -करोड़ों मनुष्यों ,पशु -पक्षियों की आवश्यकता को पूरा करने की क्षमता है परन्तु प्रकृति किसी एक मनुष्य के लालच की पूर्ति नहीं कर सकती | महात्मा की यह उक्ति भारत में दिन - प्रतिदिन गम्भीर रूप ले रहे जल - विवादों पर खरी उतरती है | जो जल ईश्वर ने हमें जीवन की उत्पति और विकास के लिए प्रदान किया है वहीं आज जीवन के विनाश और आपसी युद्धों का कारण बन गया है |

सिंधु जल संधि दो देशों के बीच जल विवाद पर एक सफल अंतरराष्ट्रीय उदाहरण है |56 साल पहले भारत और पाकिस्तान ने इस समझौते पर हस्ताक्षर किए थे |दोनो देशों के बीच दो युद्धों और एक सीमित युद्ध कारगिल और हज़ारों दिक्क़तों के बावजूद ये संधि कायम है. विरोध के स्वर उठते रहे लेकिन संधि पर असर नहीं पड़ा |अमरीका की ओरेगन स्टेट यूनिवर्सिटी की वेबसाइट पर इस समझौते की पीछे की कहानी है | ऐरॉन वोल्फ़ और जोशुआ

न्यूटन अपनी केस स्टडी में बताते हैं कि ये झगड़ा 1947 भारत के बंटवारे के पहले से ही शुरू हो गया था, खासकर पंजाब और सिंध प्रांतों के बीच |1947 में भारत और पाकिस्तान के इंजीनियर मिले और उन्होंने पाकिस्तान की तरफ़ आने वाली दो प्रमुख नहरों पर एक 'स्टैंडस्टिल समझौते' पर हस्ताक्षर किए जिसके अनुसार पाकिस्तान को लगातार पानी मिलता रहा | ये समझौता 31 मार्च 1948 तक लागू था |

जमात अली शाह के अनुसार 1 अप्रैल 1948 को जब समझौता लागू नहीं रहा तो भारत ने दो प्रमुख नहरों का पानी रोक दिया जिससे पाकिस्तानी पंजाब की 17 लाख एकड़ ज़मीन पर हालात खराब हो गए |भारत के इस कदम के कई कारण बताए गए जिसमें एक था कि भारत कश्मीर मुद्दे पर पाकिस्तान पर दबाव बनाना चाहता था. बाद में हुए समझौते के बाद भारत पानी की आपूर्ति जारी रखने पर राज़ी हो गया |

स्टडी के मुताबिक 1951 में प्रधानमंत्री नेहरू ने टेनसी वैली अथॉरिटी के पूर्व प्रमुख डेविड लिलियंथल को भारत बुलाया | लिलियंथल पाकिस्तान भी गए और वापस अमरीका लौटकर उन्होंने सिंधु नदी के बंटवारे पर एक लेख लिखा | ये लेख विश्व बैंक प्रमुख और लिलियंथल के दोस्त डेविड ब्लैक ने भी पढ़ा और ब्लैक ने भारत और पाकिस्तान के प्रमुखों से इस बारे में संपर्क किया | और फिर शुरू हुआ दोनो पक्षों के बीच बैठकों का सिलसिला |ये बैठकें करीब एक दशक तक चलीं और आखिरकार 19 सितंबर 1960 को कराची में सिंधु नदी समझौते पर हस्ताक्षर हुए |

हरियाणा और पंजाब जल विवाद इसका एक महत्वपूर्ण उदाहरण है या 41 साल पुराना विवाद है SYL मुद्दा कई सालों से दोनों राज्यों को जला रहा है | हरियाणा और पंजाब के बीच जल विवाद बहुत पुराना है | सन 1966 में सयुंक्त पंजाब का बंटवारा कर जब अलग हरियाणा राज्य बना तभी इस विवाद की बुनियाद पड़ गई | सन 10 साल बाद 1976 में दोनों राज्यों के बीच बंटवारे को अंतिम रूप दिया गया और इसी के साथ SYL नहर का मामले ने जन्म ले लिया |जल विवाद का दूसरा उदाहरण कावेरी जल विवाद जो कर्नाटक और तमिलनाडु के बीच है | पानी के बंटवारे का विवाद मुख्य रूप तमिलनाडु और कर्नाटक के बीच है लेकिन चूँकि कावेरी बेसिन में केरल और पुडुचेरी के कुछ छोटे छोटे से इलाके शामिल हैं तो विवाद में वो भी कूद गए हैं | और अभी तक इस विवाद को सुलझा नही सके हैं |

यदि हमें पानी को अन्तर्राष्ट्रीय युद्ध का कारण बनने से रोकना है तो हमें अभी से इस दिशा में कुछ सकारात्मक उपाये करने होंगे | जल के प्राकृतिक संग्रहण उपायों का फिर से उपयोग आरंभ करना होगा | पानी की बर्बादी को रोकना होगा और नदियों पर किसी राज्य विशेष का नहीं बल्कि केंद्र सरकार का अधिकार स्थापित करना होगा | जिससे नदियों के जल का समान वितरण सुनिश्चित किया जा सके | जल जन्म का साधन हो , मृत्यु का कारण नहीं ,यही प्रयास जल विवादों का एकमात्र हल हो सकता है |

वर्षा रानी